10

नम्रता का लिबास पहन लो
(1 पतरस 5:1-14)

सही शब्द और लगभग सही शब्द के बीच अन्तर के बारे में कहा जाता है कि यह बिजली चमकने और खटमल के चमकने वाले अन्तर जैसा है। पतरस का पहला पत्र बिजली की चमक के बदल से खुलता है। अध्याय 5 में अवश्य माननीय बातों के बाद एक सार रूप में मानना आवश्यक है: ''झुंड की रखवाली करो!''; ''सेवा करो!''; ''अधीन हो जाओ!''; ''दीन बनो!''; ''अपनी चिन्ताएं प्रभु पर डाल दो!''; ''सचेत रहो!''; ''जागते रहो!''; ''सामना करो!''; ''दृढ़ बनो''; ''स्थिर बनो!'' अवश्य माननीय बातों में स्तुति और शांति के शब्द बिखरे हुए हैं।

पतरस ने अपने पाठकों को ऐसा परामर्श और दिशा दी जिसकी उन्हें इच्छा थी और बारह प्रेरितों से अपेक्षा थी। वास्तव में तीनों में से एक से जो प्रभु के बिल्कुल करीब थे। अन्तिम अध्याय में पतरस ने अपने साथी चेलों से लगन और धीरज बनाए रखने के लिए कहा और बज़ुर्गों और जवानों की अगुवाई के लिए विशेष बातें कहीं।

साथी प्राचीनों से अपील (5:1-4)

पुराने और नये दोनों नियमों में परमेश्वर के साथ वफ़ादारी समुदाय के साथ सहभागी होने में समीलित थी। पुराने नियम में यह समुदाय इस्राएल जाति था और नये नियम में मसीह की कलीसिया है। यूनानी रोमी संसार में नगर के आरम्भिक परिवर्तितों को मसीह में लाने के समय एक प्रचारक ने काम का केवल वही भाग पूरा किया था जो किया जाना आवश्यक था। पौलुस ने तीतुस को ''शेष बातों को सुधारने'' के लिए कहा था (तीतुस 1:5)।

मण्डली के इकट्ठा होने और मिलकर काम करने के कुछ देर बाद, परिपक्व मसीही पुरुषों को मण्डली की निगरानी और अगुआई के लिए ऐल्डर चुना जाता था। पौलुस और बरनाबास के लिए कहा गया है कि पहली मिशनरी यात्रा पर उनके द्वारा स्थापित की गई कलीसियाओं में ऐल्डर नियुक्त किए गए थे (प्रेरितों 14:23), और पौलुस ने ऐसे पुरुषों को जो ऐल्डर के रूप में सेवा करने वाले हों नियुक्त करने का तीमुथियुस और तीतुस को निर्देश दिया।

प्राचीन या ''ऐल्डर'' शब्द ही इस्राएल में समृद्ध विरासत थी। व्यवस्था की पुस्तकों में मूसा ने बार बार परामर्श समर्थन के लिए ''इस्राएल के प्राचीनों'' को बुलाता था। कनान में लोगों के स्थापित हो जाने के बाद ''नगर के प्राचीन'' शब्द आम मिलता है। प्राचीन या ऐल्डर वे बूढ़े पुरुष होते थे जिन्होंने अपने आपको साबित किया होता था। उन्होंने अच्छे परिवार का पालन पोषण किया होता था और शालीनता और भक्तिपूर्ण जीवन के आदर्श के रूप में दिखाया था। कलीसिया में भी ऐसा ही था। ऐल्डर बनना सम्मान, आदर और ज़िम्मेदारी की स्थिति में सेवा करना था।

वास्तव में कलीसियाओं के आत्मिक अगुओं के रूप में सेवा करने वाले अधिकारियों के

लिए ''ऐल्डर'' नये नियम के तीन पदनामों में से एक है जैसा कि चछ्ङ्क में कई बार ''over seers'' या ''bishpos'' शब्द अनुवाद हुआ है। यह उन लोगों के लिए एक और पदनाम है जो एल्डरों के रूप में सेवा करते हैं। नये नियम में कलीसिया के आर्थिक अगुओं के लिए शायद सबसे सजावटी शब्द ''पासबान'' या ''पास्टर'' है, चाहे इस यूनानी शब्द का बेहतर अनुवाद ''चरवाहे'' है। 5:1, 2 में पतरस ने तीनों शब्दों का इस्तेमाल किया। उसने ऐल्डरों से झुंड की चरवाही करने और उसकी निगरानी करने के लिए कहा। चलते चलते हमें यह ध्यान देना चाहिए कि नये नियम में जहां भी ऐल्डरों या प्राचीनों की बात हुई है उनके लिए बहुवचन शब्द का ही इस्तेमाल किया गया है।

ऐल्डर अर्थात कलीसिया के निगरानी करने वाले या चरवाहों को सुसमाचार सुनाने वालों अर्थात प्रचारकों के साथ उलझाना नहीं चाहिए। इवैंजलिस्ट या सुसमाचार प्रचारक सुसमाचार की घोषणा करने वाला या सुनाने वाला होता है। वह किसी स्थान पर लम्बे समय या थोड़े समय के लिए हो सकता है, परन्तु उसका काम वचन को सुनाना है न कि कलीसिया की निगरानी करना। इवैंजलिस्ट के रूप में अपनी ज़िम्मेदारियों के कारण वह पास्टर नहीं है। 5:1–4 में पतरस ने पास्टरों (पासबानों) अर्थात एशिया माइनर में कलीसियाओं के आत्मिक अगुओं को सम्बोधित किया। प्रेरित को कलीसिया में योग्य, तैयार अगुओं, विशेषकर संकट के समय में, के महत्व का पता था।

पतरस ने स्वयं को ऐल्डरों के सामने उनके साथ पद और इसकी जिम्मेदारियों के सहभागी के रूप में सम्बोधित किया। सम्भवतया यह प्रेरित यरूशलेम की कलीसिया के प्राचीनों में से एक था। हो सकता है कि उसने रोम या किसी अन्य स्थान की कलीसिया के ऐल्डर के रूप में सेवा की हो। नये नियम में किसी भी ऐल्डर का अकेले उल्लेख नहीं हुआ है। हमें यह मान लेना पड़ेगा कि पतरस अपने आपको एक विशेष मण्डली के ऐल्डर के रूप में बता रहा था, चाहे उसने यह नहीं बताया कि वह मण्डली कौन सी थी।

पतरस एक साथी ऐल्डर था, परन्तु उनके उलट जिन्हें उसने लिखा, वह प्रभु के दुखों का गवाह भी था। वह उनके जैसों में ही एक था, परन्तु उनसे बढ़कर था। मसीह के दुखों की उसकी गवाही ने एक याद दिलाने वाली बात के रूप में काम किया की ऐल्डर होने के अलावा वह मसीह का प्रेरित था (प्रेरितों 1:21, 22)। पतरस के मन से प्रभु के वापस आने की बात कभी निकली नहीं थी। उसकी बड़ी आशा उनके साथ ''प्रकट होने वाली महिमा में सहभागी'' होना थी (5:1)। इसी कारण उसने ताड़नाओं की एक श्रृंखला दी।

झुंड की रखवाली करो

5:2 में ''झुंड को चराओ'' का KJV का अनुवाद अत्याधिक प्रतिबन्धक है। चरवाहे का काम अपनी भेड़ों को चराने से कहीं अधिक होता था। वह उनका साथी, रक्षक और अगुआई करने वाला होता था। इस्राएली लोगों के बीच में चरवाहा एक लोक आदर्श था शायद जैसे अमेरिकी लोगों के लिए कायोब्वाय होता है। वह अपनी भेड़ों का अपने आपको देने वाला, परोपकारी अगुआ तथा गाइड होता था। जब नबियों ने इस्राएल के साथ परमेश्वर के सम्बन्ध को दिखाना चाहा तो उन्हें चरवाहे से बेहतर रूपक कोई नहीं मिला। यशायाह के शब्द ऐल्डर के

काम की प्रासंगिकता की कुछ बातों को ध्यान दिलाते हैं, ''वह चरवाहे की नाईं अपने झुण्ड को चराएगा, वह भेड़ों के बच्चों को अंकवार में लिए रहेगा और दूध पिलाने वालियों को धीरे धीरे ले चलेगा'' (यशयाह 40:11)। यह इस प्रकार की पृष्ठभूमि ही है कि पतरस ने कलीसिया के चरवाहों को प्रोत्साहित किया।

निगरानी का काम करो

जैसे ''पास्टर/पासबान'' या ''चरवाहा'' की परिभाषा इस्राएल के राष्ट्रीय अनुभव में मिलती है, वैसे ही ''निगरान'' शब्द का अर्थ यूनानी भाषा बोलने वाले संसार से मिला है। यूनानी लोगों में *episkopos* (जिसका अनुवाद ''निगरान'' हुआ है) शब्द का इस्तेमाल धार्मिक प्रकृति के संगठनों सहित कई संगठनों में ठहराई जाने वाली ज़िम्मेदारियों वाले अधिकारियों के लिए था। निगरानी करने वाले काम सांरक्षक रूप में मामलों की निगरानी करना या काम करना था। कुरिन्थुस की कलीसिया के नाम क्लेमंड आफ़ रोम के पहली शताब्दी के अन्त के पत्र में परमेश्वर को ''ग्रहों का रचनेहारा और संरक्षक [एपिस्कोपोस]'' कहा गया है। पतरस ने यीशु को ''तुम्हारे प्राणों का रखवाला [*episkopos*] और अध्यक्ष'' (2:25) कहा। निगरानी करने वालों के रूप में ऐल्डर उनके प्राणों की रखवाली करते हैं जिन्हें उन्हें सौंपा गया है। ऐसा वे कलीसिया की शिक्षा तथा व्यवहार की निगरानी करने के द्वारा करते हैं, ताकि जो कुछ कहा या किया जाता है उससे परमेश्वर के नाम को महिमा मिले।

नमूना बनें

पतरस ने झुंड के लिए नमूना बनने के लिए तीन नकारात्मकों के साथ 5:3 में अपनी ताड़ना पहले रखी। ऐल्डर के रूप में कोई सेवा न करे (1) क्योंकि उसे इसके लिए विवश किया गया है या (2) वह इससे व्यक्तिगत लाभ लेगा या (3) क्योंकि वह अपने साथी के ऊपर अधिकार चाहता है। ऐल्डर के लिए प्रभु के सामने अपने पूरे तोड़े दे देना आवश्यक है। नेतृत्व की अपनी स्थिति के कारण ऐल्डर के लिए अपनी बातों और कामों दोनों के द्वारा नमूना ठहराने में सचेत रहना चाहिए।

किसी पुरुष को प्रभु की कलीसिया में ऐल्डर बनने की चाह क्यों करनी चाहिए? क्या बिना बोझ लिए हर मसीही के लिए काफ़ी काम और जिम्मेदारी नहीं है? पतरस ने इसका उत्तर दिया: पहले तो यदि 4:10 की शर्त के भीतर रहते हुए यदि किसी में ऐल्डर के रूप में सेवा करने की योग्यता है: ''जिसको जो बरदान मिला है, वह उसे परमेश्वर के नाना प्रकार के अनुग्रह के भले भण्डारियों की नाईं एक दूसरे की सेवा में लगाए।'' दूसरा ''महिमा का मुकुट जो मुरझाने का नहीं'' उन सब की प्रतीक्षा करता है जो वफ़ादारी से उसकी प्रतीक्षा करते हैं (5:4)।

दो यूनानी शब्द कई बार ''मुकुट'' शब्द के पीछे रहते हैं। एक का अर्थ राजा का मुकुट है। दूसरे का अर्थ विजय का मुकुट है। जैसे खेलों में जीतने वाले धावक को मिलता है। धावक को मुकुट मिलना सम्मान का प्रतीक होता था पर यह केवल पत्तों से बना होता था। शीघ्र ही यह सूखकर फट जाता था। प्रधान चरवाहे द्वारा अपने प्रगट होने के समय अपने विश्वासयोग्य सेवकों को दिया जाने वाला मुकुट ऐसा नहीं होना था। चरवाहे के रूप में सेवा करने का अर्थ अच्छे

चरवाहे के साथ उद्देश्य और भविष्य में विशेष एकता होना था।

चिन्ताएं प्रभु पर डाल देने की विनती (5:5-7)

प्रभावकारी अगुओं के अच्छे अनुयायी होने आवश्यक हैं। ऐल्डर केवल उनकी शुभ इच्छा से जिनकी वे सेवा करते हैं नेतृत्व दे सकते हैं। वे बज़ार वाले निरिक्षक की तरह काम नहीं कर सकते जो इसलिए नेतृत्व करता है क्योंकि वेतन उसके हाथ में होता है या सैनिक अगुआ जो बलप्रयोग करता है। मसीही लोगों को उनका दिशानिर्देश स्वीकार कर लेना आवश्यक है जिन्हें वे स्वेच्छा से अपने आत्मिक अगुवे चुनते हैं। इसलिए पतरस ने प्राचीनों को ताड़ना देते हुए इसी संदर्भ में जवान मसीही लोगों को परामर्श दिया।

पतरस ने जवान मसीही लोगों को कलीसिया के आत्मिक रखवालों को स्वेच्छा से सौंप देने को कहा। अधिकतर परिस्थितियों में समर्थन करने का अर्थ कुछ नुकसान या कमजोरी होता है, परन्तु स्वेच्छा से सौंपने पर ऐसा नहीं है। जितना आवश्यक जवानों के लिए अपने आपको अधीन होने के लिए देना है उतना ही ऐल्डरों का अपनी ज़िम्मेदारी को स्वीकार करना है। सबको अपने अलग अलग दानों को ''परमेश्वर के नाना प्रकार के नाना प्रकार के अनुग्रह के भले भण्डारियों की नाईं एक दूसरे की सेवा में'' लगाना है (4:10)।

अच्छा अनुयायी होने के कारण एक निश्चित मात्रा में दीनता आवश्यक है। पतरस ने अपने युवा समकालीनों से दीनता को पहन लेने का आग्रह किया। यूनानी शब्द का अनुवाद ''कमर बांधे रहो'' नये नियम में केवल यहीं और संसारिक लेखों में बहुत कम बार मिलता है। इसका अर्थ एक प्रकार का लिबास है जो कमर से बंधा होता है। कइयों का अनुमान है कि घरेलू सेवक अपने गिर्द कपड़ा बांधते थे इसलिए पतरस अपने पाठकों से किसी भी रूप में सेवा करने का आग्रह कर रहा था जिससे कलीसिया को लाभ हो। अन्य लोग इस बात पर तर्क देते हैं कि केवल धनवान लोगों द्वारा पहने जाने वाला बढ़िया वस्त्र कमर के साथ बांधा जाता है। यदि ऐसा है तो यह प्रेरित अपने पाठकों को बता रहा था कि दीनता से कमर बांधने पर परमेश्वर की दृष्टि में वे इतने शानदार ढंग से तैनात होंगे।

लगभग यह पक्का ही है कि पतरस इस शब्द के दोनों विचार देने का इच्छुक नहीं था, परन्तु यह आवश्यक नहीं लगता कि हम उसके शब्दों से लाभ लेने के लिए उनमें से एक को चुने। वास्तव में विनम्र व्यक्ति के स्वभाव में यह खूबी होती है कि वह प्रभु की और उसके लोगों की तलाश करता है चाहे इससे उसे पहचान मिले या न। यह गुण ''परमेश्वर की दृष्टि में बड़ा है'' (3:4)। इन सब कारणों से नीतिवचन 3:34 के शब्द लागू होते हैं: ''ठट्ठा करने वालों से वह निश्चिय ठट्ठा करता है और दीनों पर अनुग्रह करता है।''

पुराना और नये दोनों नियमों में पाए जाने वाले सबसे दृढ़ विचारों में से एक यह है कि परमेश्वर घमण्डियों को नीचा करता है और दीनों को ऊपर उठता है। हन्ना के प्रशंसा सुन्दर स्तूतिगान में यह शब्द मिलते हैं ''यहोवा निर्धन करता है और धनी भी बनाता है, वही नीचा करता और ऊंचा भी करता है। वह कंगाल को धूलि में से उठाता; और दरिद्र को घूरे में से निकाल खड़ा करता है, ताकि उनको अधिपतियों के संग बिठाए, और महिमायुक्त सिंहासन के अधिकारी बनाए ...'' (1 शमुएल 2:7, 8)। मरियम के शब्द भी बिल्कुल वैसे ही हैं: ''उस ने बलवानों

को सिंहासनों से गिरा दिया; और दीनों को ऊंचा किया। उस ने भूखों को अच्छी वस्तुओं से तृप्त किया, और धनवानों को छूछे हाथ निकाल दिया'' (लूका 1:52, 53)। तीन बार यीशु ने कहा, ''जो कोई अपने आपको बड़ा बनाएगा वह छोटा किया जाएगा; और जो कोई अपने आपको छोटा बनाए वह बड़ा किया जाएगा'' (मत्ती 23:12; लूका 14:11; 18:14)। पतरस और याकूब दोनों ने मसीही लोगों से अपने आपको परमेश्वर के सामर्थी हाथ के अधीन करने का अग्रह किया और प्रतिज्ञा की कि परमेश्वर उन्हें ऊपर उठाएगा (तुलना याकूब 4:10)। अपने आपको परमेश्वर के सामने दीन बनाना और अपनी सारी चिन्ताओं को उसके ऊपर डाल देना सुरक्षित है, क्योंकि वह सदैव अपकी चिन्ता करता है।

भाइचारे के साथ खड़े होने की अपील (5:8-11)

तीसरी बार पतरस ने अपने पाठकों से मन में दीन होने का आग्रह किया (देखें 1:13; 4:7)। संयम और सचेत होना सबसे आवश्यक हैं क्योंकि मसीही व्यक्ति का एक बड़ा शत्रु शैतान है जो गर्जने वाले सिंह के समान इस खोज में रहता है कि किसको फाड़ खाए। यह सम्भव है, बल्कि सम्भावना है कि पतरस रोमी राज्य की सरकार को शैतान मानता था। रोमी शाही शक्ति ही थी जो उन ''भयानक परीक्षाओं'' के पीछे थी जिनका पहले पतरस ने संकेत दिया (देखें 1:6, 7; 4:12); यही वह शक्ति थी जो मसीही लोगों को निगल जाने की धमकी देती थी।

याकूब 4:7 में प्रभु के भाई ने कहा, ''शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा।'' पतरस ने भी अपने पाठकों से शैतान का सामना करने का आग्रह किया, परन्तु उसने इस सामने को उन सतावों के साथ जोड़ दिया जो पत्र में हर जगह थे। दूसरों का सामना करते हुए परमेश्वर के लोगों की संगति से सामर्थ मिलती थी। यह ज्ञान कि दूसरे लोग हमारे ऊपर निर्भर हैं कई बार हमें सही काम करने के लिए बड़ा प्रोत्साहन देता है। हाल ही में मैंने एक भाई को यह कहते सुना, ''कई बार मैंने गलत काम करने की परीक्षा पर केवल इस विचार के साथ विजय पाई है कि कलीसिया में अच्छे लोग हैं जो मुझ से बेहतर की उम्मीद करते हैं।'' साथी मसीही लोगों की संगति और समर्थन भलाई करने के लिए एक बड़ा प्रोत्साहन है और उतना ही पाप से दूर रहने के लिए भी।

पतरस अपने पत्र के अन्त में पहुंचकर इन मसीही लोगों को याद दिलाता है कि परमेश्वर जिसकी सेवा वे करते हैं वह भलाई और अनुग्रह का परमेश्वर है। अपने पत्र की आरम्भिक आयतों में, पतरस ने अपने पाठकों को पुन: आश्वासन दिया था कि वे चुने हुए लोग हैं इसलिए यह उपयुक्त था कि अन्त में वह उन्हें याद दिलाए कि वे विशेष लोग थे जिन्हें ''मसीह ने अपनी अनन्त महिमा के लिए'' बुलाया था। उनके लिए कष्ट केवल थोड़ी देर का था (1:6) क्योंकि शीघ्र ही प्रभु ने लौट आना था। उस समय निर्बलता और असहायपन को सामर्थ द्वारा निगल लिया जाना था। परमेश्वर ने उन्हें दृढ़ और मज़बूत बनाते हुए फिर से बहाल कर देना था।

अन्तिम टिप्पणियां (5:12-14)

सामान्य व्यवहार का पालन करते हुए पतरस ने उस कलीसिया की ओर से जहां वह था अपने पाठकों को सलाम भेजा। यहां पर अन्तिम अभिवादन पत्र के विवादास्पद पहलुओं में

से एक था। यह वाक्यांश अस्पष्ट था जिस कारण KJV में इटैलिक किया गया है। मूल में इस प्रकार है, ''जो बेबिलोन में तुम्हारे समान चुनी हुई है [समान्य सर्वनाम का नहीं बल्कि स्त्रीलिंग उपपद का इस्तेमाल किया गया है], ... तुम्हें नमस्कार कहती हैं।'' यूनानी में ''कलीसिया'' शब्द स्त्रीलिंग संज्ञा है। अनुवादों से आम तौर पर संकेत मिलता है कि यह बाबुल की कलीसिया ही थी जिसकी बात पतरस ने की। हमने पहले ही यह विचार दिया है कि बाबुल या बेबिलोन सांकेतिक रूप से रोम को ही कहा गया है। नये नियम के बाहर के यहूदी लेखों में और प्रकाशितवाक्य में (उदाहरण 18:9, 10) बेबीलोन को ''बड़ा नगर'' कहा गया है जो ''पृथ्वी के राजाओं'' पर राज करता था।

पतरस के साथ अन्तिम अभिवादन में मिलने वाला व्यक्ति यूहन्ना मरकुस था। प्राचीन परम्परा के अनुसार मरकुस रचित सुसमाचार के पीछे पतरस का अधिकार था। उसे रोम में पतरस के साथ इस प्रेरित के जीवन के अन्त के निकट देखना दिलचस्प है। मरकुस का अन्तिम उल्लेख हमें (15:39) प्रेरितों के काम में मिलता है। परन्तु पौलुस ने तीमुथियुस से रोम आने के समय मरकुस को साथ लाने के लिए कहा (2 तीमुथियुस 4:11)। यह इस बात का एक संकेत हो सकता है कि 2 तीमुथियुस की पुस्तक 1 पतरस के लिखे जाने से पहले लिखी गई थी।

सारांश

1 पतरस चाहे एक संक्षिप्त पत्र है पर इसमें जानकारी और शिक्षा का बड़ा भण्डार है। हमने अपने सामने दो प्रश्न रखने का प्रयास किया है: (1) पतरस अपने आरम्भिक पाठकों को क्या कहना चाहता था? और (2) हमें अपने समकालीन संसार की कलीसिया के लिए उसके शब्दों की क्या प्रासंगिकता बनानी चाहिए?

पत्री में तीन विचार बार बार आते हैं: (1) पतरस के आरम्भिक पाठकों पर सताव हो रहा था क्योंकि उन्होंने मसीह का नाम अपनाया था। कष्ट पीछे कहीं दूर पृष्ठभूमि में नहीं बल्कि 1:6, 7; 3:13–17; 4:12–19; और 5:9, 10 में सीधे पाया गया है। (2) दुख थोड़ी देर के लिए सहा जा सकता है क्योंकि प्रभु ने शीघ्र ही दोबारा आ जाना था। मसीही लोग उम्मीद में जीते थे। (3) मसीही लोगों को पवित्रता का जीवन बिताना आवश्यक था। आधुनिक कलीसिया के लिए 1 पतरस के इन सबकों को सीखने के लिए हमारे लिए वह बलशाली प्रभाव बनने के लिए सामर्थ और प्रोत्साहन लेना आवश्यक है जिसकी परमेश्वर संसार में हम से इच्छा करता है।